International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का आभासी कक्षा परियोजना का अध्ययन

शोधार्थी नीतू शर्मा

श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी और मेडिकल साइंसेस, सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

शोध निर्देशक

डॉ ललित मोहन चौधरी

श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी और मेडिकल साइंसेस, सिहोर, मध्य प्रदेश , भारत

सारांश

शिक्षा केवल आर्थिक दृश्टिकोण से ही समाज को सयक्त नही बनाती वरन् मानव संसाधन का भी सर्वांगीण विकास भी करती है। शिक्षा ही आधुनिक समाज की मजबूत नींव है शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक शिक्षा प्राप्त करता है और यह प्रक्रिया पूर्ण जीवन चलती रहती है। प्रारम्भ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर–परिवार एवं समुदाय करते थे। तत्पश्चात् व्यक्ति औपचारिक साधनों जैसे विद्यालय, कॉलेज एवं युनिवर्सिटी से शिक्षा ग्रहण करता है। माध्यमिक शिक्षा ही विद्यार्थियों के भविश्य को निधा ंरित करती है किन्तु वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा अपनी बुर` दौर से गुजर रही है। आज माध्यमिक स्तर की शिक्षा के विकास एव ं इसका स्तर सुधारने के लिये हमारी सरकारों और अन्य सभी एजेन्सियों द्वारा काफी प्रयास किये जा रहे है फिर भी माध्यमिक शिक्षा का स्तर अभी तक अपने उच्चतम् सफलता की ओर अग्रसर नही हुआ है, न ही ये प्रयास वास्तविक रूप में धरातल पर परिलक्षित हुए हैं। विद्यालय में छात्रों के लिए सीखने के अनुभवों और सृजित अवसरों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के माध्यम से उनका विकास निर्धारित किया जाता है।

1.1 प्रस्तावना

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। देश धन–धान्य से पूर्ण था और भार्य तथा पराक्रम में अद्वितीय था। भारत में अपार धन–सम्पदा इसलिए थी कि दे ा ज्ञान–विज्ञान से संपुष्ट था। भारत का वैभव उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है कहा जा रहा है कि वह राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। हम विभिन्न प्रकार के कौ'शलों को अर्जित करने के लिये सीखने का ही प्रयो• करते हैं।

1. शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यालयी विषयों में अर्जित ज्ञान या विकसित कौ ाल का शिक्षक द्वारा परीक्षा प्राप्तांको या अंको द्वारा निर्दिष्ट करने से है। विद्यार्थियों ने किस सीमा तक अपनी योग्यताओं का विकास किया है, उसका आंकिक रूप में प्रस्तुीकरण ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है।

2. समायोजन :– लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्य पूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। यहां समायोजन से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन से है।

3. माध्यमिक विद्यालय :– ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते है। यहां माध्यमिक स्तर में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियो ं को लिया गया है।

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

आभासी कक्षाकक्ष में, छात्र एक सीखने वाले समूह का एक सक्रिय सदस्य होता है, लेकिन जिस गति से समूह के अन्य लोग सीख सकते हैं, उससे अलग–अलग स्वतंत्र रूप से सीखते और समझते हैं। आभासी कक्षाकक्ष एक भौतिक स्थान के बजाय कक्षा के सदस्यों के बीच बातचीत के लिए एक 'आभासी सुविधा' प्रदान करता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और सीखना चारों ओर के परिवेश से अनुकूलन में सहायता करता है। किसी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में कुछ समय रहने के पश्चात् हम उस समाज के नियमों को समझ जाते हैं और यही हमसे अपेक्षित भी होता है। हम परिवार, समाज और अपने कार्यक्षे त्र के जिम्मे दार नागरिक एवं सदस्य बन जाते हैं। यह सब सीखने के कारण ही सम्भव है। हम विभिन्न प्रकार के कौशलों को अर्जित करने के लिये सीखने का ही प्रयोग करते हैं। परन्तु सबसे जटिल प्रश्न यह है कि हम सीखते कैसे हैं? आभासी कक्षा कक्ष प्रणाली अपने उपयोगकर्ताओं को दोहरा लाभ पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है। अपनी इसी विशेषता और सामर्थ्य के फलस्वरुप आभासी कक्षा कक्ष प्रणाली विद्यार्थियों के लिए निम्न प्रकार से बहु उपयोगी सिद्ध हो सकती है

1.2 समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का आभासी कक्षा परियोजना का अध्ययन भोपाल जिले के संबंध में । यह एक सर्वेक्षण प्रकार का अध्ययन है जो आभासी कक्षा का अध्ययन करने के लिए किया गया है वीसीपी की वर्तमान स्थिति जैसे कई पहलुओं के साथ उच्च प्राथमिक विद्यालयों में परियोजना, इसकी छात्रों और शिक्षकों पर प्रभाव शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली कार्यान्वयन में समस्याएं प्रधानाध्यापक और संबंधित डाइट–व्याख्याता छात्रों शिक्षकों प्राचार्यों की धारणाएं संबंधित व्याख्याता आदि वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से आवृत्ति प्रतिशत और ची–वर्ग की सहायता से विधिवत डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया था विश्लेषण किए गए डेटा यहां तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं, जिसके बाद विवरण और व्याख्या किया गया है।

1.3 आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था की कमियां एवं सीमाएं

किसी भी वस्तु या प्रक्रिया का अपने सही वास्तविक रूप में उपस्थित रहकर क्रियाशील ना होना ही अपने आप में उसकी कमी तथा सीमाओं की ओर इशारा करने में काफी रहता है।

1. इसका लचीलापन छात्रों को गुमराह कर सकता है और वह इससे नाजायज फायदा उठाने की कोशिश भी कर सकते हैं। छात्रा अपनी शक्ति और समय को निरुद्देशीय कार्यों में खर्च कर सकते हैं।

2. प्रायः यह देखा जाता है कि आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था के संगठन और प्रबंधन में अधिगम सामग्री और विद्यार्थियों को उसे प्रदान करने के तरीकों की गुणवत्ता में काफी असंदिग्धता रहती है। इस कार्य हेतु जो फैकल्टी नियुक्त की जाती है वह अपने कर्तव्यों के निर्वाह में समुचित रूप से सक्षम नहीं पाई जाती है।

3. ऐसी कोई भी आभासी कक्षा नहीं हो सकती है जिसमें वास्तविक कक्षा शिक्षण के जीवित अनुभव, अंतः क्रिया तथा संबंधों की गुणवत्ता, सामाजिकता तथा अंतरंगता पाई जाए।

4. विद्यालय शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। ऐसी कक्षा में हम विद्यार्थियों को सब कुछ नहीं दे पाते जिसके माध्यम से उसके शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा नैतिक विकास को उचित आधार तथा दिशा प्राप्त हो, उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था में काफी कमियां हैं, जिनकी वजह से वर्तमान या कक्षा शिक्षण व्यवस्था का अंग बनाना या उसकी जगह इसे लागू करना संभव नहीं है, परंतु यह भी सत्य है कि इस व्यवस्था में इतना सामर्थ्य है कि वह सबके लिए शिक्षा तथा सबके लिए बिना भेदभाव की एक जैसी तथा

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

बेहतरीन शिक्षा, जैसे सुनहरे सपनों को साकार कर देश की प्रगति में पूरा पूरा योगदान दे सकती है। खुले दिल से स्वीकार करना चाहिए और आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

1.4 शोध की परिकल्पना

सामान्यतः अनुसंधान की तीन विधियां निम्नवत हैं–

• **ऐतिहासिक विधि** (ऐतिहासिक अनुस ंधान का सम्बन्ध भूतकाल से है। यह भूतकाल का वि लेशण करता है तथा इसका उद्देश्य भूतकाल के आधार पर वर्तमान को समझना तथा भविश्य के लिये तैयार होना है।)

• **प्रयोगात्मक विधि** (प्रयोगात्मक अनुसंधान इस तथ्य का स्पश्टीकरण करता है कि जब सभी सम्बन्धित चरों अथवा परिस्थितियों पर सावधानीपूर्वक नियन्त्रण करके प्रयोगात्मक चर में नियन्त्रण किया जाय तो क्या निश्कर्श प्राप्त होगा।)

• **वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि** (वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि में परीक्षणों के द्वारा प्रतिदर्शों से आ ंकड ं एकत्र करना तथा वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना है।) वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि अतीत मे ं जो कुछ भी विद्यमान था उसकी योजना, उसका वर्णन करना एवं उसकी व्याख्या करना ऐतिहासिक अनुस ंधानों का कार्य है परन्तु कुछ ऐसे अनुसंधान हैं जो वर्तमान तथ्यों का अध्ययन एवं व्याख्या करते हैं, इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान प्रमुख है। करलिंगर के भाब्दों में, भसर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक अन्वेशण की वह भााखा है जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान की विशेशता

• इस अनुसंधान विधि के द्वारा हम अधिक व्यक्तियों के विशयों के आंकड़े एक ही समय में प्राप्त करते हैं।

• इस अनुसंधान विधि का सम्बन्ध सम्पूर्ण जनसंख्या या उसके चयनित न्यादर्शा से होता है, न कि व्यक्ति विशेश।

• इस अनुस ंधान विधि के तहत भाोधकर्त्ता चयनित भाोध समस्या पर ही अध्ययन कार्य सम्पादित करता है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिये शोधार्थी द्वारा भोपाल संभाग (मध्य प्रदेश) के फंदा एवं बेरासिया के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं एवं 10वीं के 13 आयु वर्ग के छात्र एवं छात्राओं को जनसंख्या के रूप में चुना गया जिनकी संख्या लगभग 10,913 है।

न्यादर्श

जब किसी जनसंख्या में से किसी चर का विशिश्ट मान ज्ञात करने के लिये उसकी कुछ एक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्याद ंन (Sampling) कहते है ं तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। डेमिंग (1984) के अनुसार प्रतिचयन सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का केवल एक अंश मात्र ही नहीं है बल्कि प्रतिचयन वह कला तथा विज्ञान है जिसकी सहायता से उपयोग में लाये जाने वाले आँकड़ों की विश्वसनीयता को प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के द्वारा नियंत्रण में रखा जा सकता है तथा उसका मापन भी किया जा सकता है।

1.5 अनुसंधान क्रियाविधि

जैसा कि वर्तमान अध्ययन विस्तृत जानकारी एकत्र करने के लिए आयोजित किया गया था मौजूदा वर्तमान परिस्थितियों को सही ठहराने के लिए डेटा को नियोजित करने के इरादे से घटनाएँ सर्वेक्षण विधि प्रस्तुत अध्ययन को क्रियान्वित करने में अनुसंधान का प्रयोग किया गया है। सामान्य या वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध किसी दी गई घटना की वर्तमान स्थिति के विवरण की ओर उन्मुख होते हैं। शोधार्थिनी द्वारा वर्तमान भाोध अध्ययन हेतु भोपाल संभाग के फंदा एवं बेरासिया विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालयों का चयन अनियमित न्यादर्श विधि द्वारा किया गया जिनमें से सरकारी धमंतोडी (कक्षा 1 से 8) संदीपन गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल सरकारी एमएस अरवालिया (कक्षा 1 से 8) सरकारी एमएस अमझरा (कक्षा 1 से 8) शासकीय शुभाष प्राथमिक शाला बालक बसई संदीपन गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल शासकीय मध्य विद्यालय करारिया नई का चयन किया गया।

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

तालिका संख्या–1: भोपाल संभाग के अंतर्गत विकास खंड

भोपाल संभाग के अंतर्गत विकास खंड	
विकासखण्ड का नाम	फंदा
	बेरासिया

तालिका संख्या–2: चयनित जनसंख्या

s.no	**अध्ययन हेतु चयनित जनस ंख्या**
1	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वीं एवं 10वीं के 13 + आय ु वर्ग के समस्त छात्र
2	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वीं एवं 10वीं की 13 +. आयु वर्ग की समस्त छात्रायें
3	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा कक्षा 9वी ं एवं 10वीं के 13 + आयु वर्ग के समस्त छात्र
4	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वी ं एवं 10वीं की 13 +. आयु वर्ग की समस्त छात्रायें

तालिका संख्या–.3 कम्प्यूटर अभिवृत्ति

Computer attitute	Students	N	M	SD	T value	Remark
Govt & Private Sec. Level	Male	310	77.96	8.05	3.23	significant
	Female	320	76.30	8.76		

तालिका संख्या–4 व्यक्तित्व गुण

Personality Trait	Data of Secondary School Male & Female students	
Activity	276	275
Passivity	21	35
Enthusiastic	273	278
Non-Enthusiastic	26	22
Assertive	210	199
Submissive	87	101
Suspicious	103	127
Trusting	196	172
Depressive	103	126
Non-Depressive	199	181

1.6 आंकड़ों का विश्लेषण (Analysis of Data):

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत्छात्र–छात्राओं का कम्प्यूटर अभिवृत्ति स्तर निम्न प्रकार पाया गया।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की कम्प्यूटर अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

1.7 निष्कर्ष

तालिका सख्या–4 में सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 77.96 एवं 76.30 तथा मानक विचलन मान 8.05 एवं 8.76 की गणना की गयी। दोनों समूहों के टी–अनुपात की गणना करके टी–मान 3. 23 प्राप्त हुआ, जो कि सारणीयन मान 0.05 सार्थकता स्तर एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 2.59 से अधिक है अतः दोनों ही सार्थकता स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। H2.0 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की विभिन्न व्यक्तित्व गुणों के आधार पर कम्प्यूटर अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है। H2-1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सक्रियता–निश्क्रियता (Activity Passivity) व्यक्तित्व गुण वाले छात्रों के कम्प्यूटर अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ सूची :

[1] Gupta, K. A. and Baliya, J. N.(1991). “Components of Computer Education” , Journal – The Primary Teacher, Vol. 16, No. 1, pp. 20-22. January.

[2] Francis, L.; Katz, Y.J. and Evans, T. (1996) “The relationship between personality attitude towards computer an investigation among female undergraduate students” in Israel, British, Journal of Education and technology 27 : 3 PP 161-170

[3] अग्रवाल, वाई.पी. (2000) : सांख्यिकी विधियाँ, स्ट्रेलिंग पब्के ान प्रा.लि., नई दिल्ली।

[4] बेस्ट, जॉन डब्लयू (1963) : रिसर्च इन एज्यूके ान, प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, नई दिल्ली।दबे, भावेश चन्द्र (2011) : ‘‘विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव,

[9] अध्ययन आदत एवं आत्म वि वास का प्रभाव, 2011

[10] Archana KP (2002). Correlates of Academic Achievement. Indian J.Educ. Res. 21:75-76.Ed. Cairns and Christopher Alan Lewis (2002). Collective Memories, Political Violence and Menatl Health in Northern Ireland, published by Ame. J. Psych. Asha, C.B. (2003):

आधुनिक भारतीय शिक्षा, वर्ष 31, अंक 3 जनवरी 2011, पेज 89–95

[5] कुमार स ुभाश, चौ0 चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठः उच्चत्तर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी अध्ययन आदत, समायोजन तथा शैक्षिक–उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, 2009

[6] कुमार एस0 के0, केरल यूनिवसि र्टीः फैक्टस र इनफ्लुएंसिंग एल्कोहॉलिक्स एण्ड ड्रग एडिक्सन अमंग इन कॉलेज स्टूडेंट्स इन केरल, 1992 ग ुप्ता ए0, पंजाब यूनिवर्सिटीः पर्सनैल्टी एण्ड मेंटल हैल्थ कॉनकोमिटेंट ऑफ रिलीजियसनेस इन द तिब्बतन स्टूडेंटस इन एडोलिसेंट ऐज ग्रुप, 1980

[7] गुप्ता एस0पी0, भारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, सांख्यिकीय विधिया ं, 2003

[8] जाफरी सदाफ, अलीगढ मुस्लिम वि वविद्यालय, अलीगढः माध्यमिक स्तर में अध्य्यनरत छात्रों की भौक्षिक–उपलब्धि पर पारिवारिक माहौल, मानसिक स्वास्थ्य,

[11] Creativity–Intelligence, Academic Stress and Mental Health. Journal of Community Guidance and Research, vol.20 (1), 41-47.